National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 149-152

हिन्दी सिनेमा के खलनायक और खलनायिकाएं; उद्भव, विकास और बदलता स्वरूप

मनीष कुमार जैसल

फिल्म शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना: खलनायक का उदय

दरअसल किसी भी फिल्म के नायक का नायकत्व खलनायक की अपनी क्रूरता,दुष्टता,चालाकी,धोखेबाज़ी,और धूर्तता से ही आँकी जा सकती है। फिल्म में खलनायक जितना क्रूर होगा नायक उतना ही बड़े स्वरूप में दर्शको को दिखाई देता है । हिन्दू मेथोड़ोलोजी में ही देखें तो रामायण के कई चरित्र अभिनेता और खलनायक की भूमिका और परिभाषा को स्पष्ट कर देते है। सीधे तौर पर कहाँ जाएँ की खलनायक का उदय हमारे धर्मशास्त्रों से ही हुआ है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। रावण का खलनायकीय रूप आम जनमानस में गहरे रूप में जाम चुका है। वहीं खलनायिकाओं में कैकेई सर्वोच्च स्थान पर है ।यहाँ यह भी बताना जरूरी मालूम देता है की भारत में ही रामायण से संबन्धित विरोधाभाष है। दक्षिण और उत्तर भारत की रामायण में नायक और खलनायक में ही उलटफेर है। हिन्दी सिनेमा में कै खलनायक और खलनायिकाएं रामायण के इनहि पात्रों का रूप लेते हुए खलनायकीय रूप में आसानी से देखे जा सकते है।

बुराई और अच्छाई को ही समेटे हुए हमारा हिन्दी सिनेमा एक लंबे अरसे तक फिल्में बनाता आया है। 70 से 90 का दशक घोर व्यावसायिक युग खलनायकीय युग का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। जहां एक ओर अमिताभ बच्चन जैसे अभिनेता नायक थे तो वहीं प्राण,अमरीश पूरी,अजित खान,अमजद खान,प्रेम चोपड़ा रंजीत,जैसे खलनायक । जिनके वगैर नायक का प्रभावशाली रूप दर्शकों के अन्तर्मन तक पहुचाया ही नही जा सकता था।

किसी कलाकार के खलनायक होने की सबसे बड़ी सफलता यहीं है की लोग उसे बुरा समझे और उससे नफरत पैदा हो । मोना डार्लिंग के संवाद वाले अजीत खान,शोले का गब्बर सिंह (अमजद खान),शान के शाकाल (कुलभूषण खरबन्दा), फिल्म सड़क की महारानी (सड़श्हीव आम्रपुरकर),मोगेम्बो खुश हुआ वाले अमरीश पूरी,आज भी खलनायकीय रूप के लिए याद किए जाते है। वहीं इन फिल्मों को देखते हुए इनके चरित्र से दर और नफरत हो जाना स्वत; हो जाने वाली प्रक्रिया का हिस्सा है।

आँखों में अजीब का नशा,खुद के फाड़े के लिए किसी के जीवन से भी खेलने का माद्दा रखने वाले,हर गलत काम करना विलेन का मौलिक कर्तव्य माना जाता है। अपनी नकारात्मक छवि के कारण रंजीत और प्रेम चोपड़ा जैसे अभिनेताओं को उनकी निजी ज़िंदगी में काफी तकलीफ़ें उथनी पड़ी थी। कई मंचों में रंजीत पुराने दौर को याद करते हुए कह भी चुके है की उन दिनों ये आलम था की अगर मई कहीं जाता था तो लोग कहते थे अरे रंजीत आ गया,और लोग महिलाओं को सेफ जगहों पर भेजने लगते । आप उनकी खलनायकीय चरित्र वाली फिल्में,अमर अकबर एंथोनि,शराबी,मुकद्दर का सिकंदर,लावारिस में उनके खौफ को आसानी से महसूस कर सकते है।

लंबे अरसे तक अबला और सताई हुई नारी के किरदार निभाने वाली शबाना आज़मी ने मकड़ी और मतरू की बिजली का मंडोला जैसी फिल्मों में खलनायिका का किरदार निभाया है। खलनायकीय चरित्रों के बदलते रूप की चर्चा करें तो पाएंगे की पहले की फिल्मों में विलेन सिर्फ विलेन ही दिखाया जाता था। उसके खलनायक बनने की कहानी को पर्दे पर पेश नहीं किया जाता था। वहीं आज की फिल्मों में स्थापित अभिनेताओं द्वारा निभाएँ गए खलनायकीय चरित्रों में उनके खलनायक बनने की कहानी को पेश किया जाता है। क्या यह अभिनेता की निजी ज़िंदगी में उस किरदार के न पड़ने वाले प्रभावों के चलते किया जाता है ? यह शोध और जिज्ञासु प्रश्न है। क्योकी इसके पूर्व कई स्थापित खलनायकों को उनकी निजी ज़िंदगी में काफी दिक्कतें उनके खल चरित्रों के चलते उथनी पड़ी हैं । इस कथन का अपना मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हो सकता है तथा इस संदर्भ में एक शोध की आवश्यका भी महसूस की जा रही है।

आज तो इंसाफ होगा या मामला साफ होगा जैसे संवादों को जीवंत करने वाले अभिनेता खलनायक जीवन जी , लाला सुखी राम के किरदार में कन्हैया लाल,यादों की बारात,त्रिशूल,कालीचरन जैसी फिल्मों में खलनायक रहें एम बी शेट्टी,अभिनेत्री अनीता राज के पिता जगदीश राज जिनहोने आग ही आग,डॉन,मजबूर,एक ही भूल,ड्रीमगर्ल जैसी फिल्मों में खलनायक की भूमिका निभाई है। जिससे सिनेमा में खलनायक की शुरुआत होने का पता चलता है। तथा उनके प्रभावों और बदलते स्वरूपों को भी देखा जा सकता है।

भारतीय सिनेमा के शुरुआती फिल्में जिनमें धार्मिक फिल्मों की भरमार थी। उनमें भी खलनायकों ओ आसानी से देखा जा सकता है । फर्क सिर्फ इतना है की ये खलनायक धर्म शास्त्रों से लिए गए थे । वही बाद की लगभग हर फिल्म में एक खूंखार खलनायक होता था । वह कितना खूंखार है यह दिखाने के लिए उसकी खूंखारी में तरह तरह के कसीदेन गढ़े जाते है। संवाद बुलवाएन जाते है। दुनियाँ के ऐसी कोई जेल बनी जो मुझे एक महीने से ज्यादा कैद रख सकें,अपने आदमियों से कहों की बंदूकें नीचे फेल दें जैसे संवाद खलनायक को प्रभावी बनाते है।

खलनायक की सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि

चालीस के दशक में जिस तरह का काला धन रखने वालों (मनी लांड्रिन्ग)और साहूकारों का बोलबाला था हमारे समाज में था उसी का चित्रण उन दिनों की फिल्मों औरत 1940 लाला सुखी राम के किरदार,बागवान में रैंडी विलेन के किरदार में रंजीत तथा मदर इंडिया जैसी फिल्मों में दिखता है। जहां जितना अहम फिल्म का अभिनेता या अभिनेत्री है उतना ही खलनायक।

50 से 60 का दशक जमींदारी प्रथा को प्रतिबिम्बित करता है वहीं जमीदार जैसे शोषक को खलनायक के रूप में पुरजोर तरीके से पेश करता है। 70 और 80 का दशक इतना सशक्त पेश किया गया की दो तीन हीरों मिलकर एक विलेन से लड़ते है ।। काला पानी,मुकद्दर का सिकंदर,जंजीर दीवार जैसी फिल्में इसका प्रमुख उदाहरण है।

इसके अलावा खलनायक के राजनीतिक सम्बन्धों पर भी चर्चा जरूरी मालूम देती है । खलनायक का राजनीतिक संबंध या हस्तक्षेप उसे और भी सशक्त बनाता है। राजनेताओं द्वारा प्रशासित किए जाने वाले खलनायकों का लबका इतिहास रहा है। राजनीतिक आतंकवाद को चित्रित करती फिल्में अर्ध सत्या,इंकलाब 1984,अंधा कानून*1983*,शहंशाह 1988,घायल आदि में खलनायक के राजनीतिक सम्बन्धों को देखा जा सकता है। फिल्म कुली 1983 का जफर खान और अर्ध सत्या का रामा शेट्टी इसके मानक माने जा सकते है । फिल्म आक्रोश में न्यायिक प्रक्रिया फोक खुलती है तथा दर्शाती है की किस प्रकार खलनायक राजनीति से प्रेरित और संबन्धित है। फिल्म कर्मा और मिस्टर इंडिया का खलनायक इसी श्रेणी में ही गिने जा

सकते है । फिल्म राम बलराम 1980 में जगतपाल (अजित खान),सुलेमान सेठ(अमजद खान),चन्दन सिंह(प्रेम चोपड़ा) प्रभावी खलनायक की भूमिका में है । वहीं कालिया का साहनी सेठ (अमजद खान) राजनीति और खलनायकों के संबंध को और विस्तार देता है।

सीधे अर्थों में कहाँ जाएँ की भले ही खलनायक इसी समाज की बुराई को प्रस्तुत करते है तथा पनपे है लेकिन उनका राजनीतिक जुड़ाव एक और विमर्श की ओर इशारा करता है । खलनायकों का सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि काफी ठोस मालूम देती है । तभी तो वह फिल्म के एक तिहाई हिस्से में अपने साम्राज्य को दिखाते हुए जीता है । वहीं फिल्म के क्लाइमेक्स में उसका अंत निर्देशक द्वारा सुनिश्चित किया जाना भी किसी राजनीति से कमतर नहीं आँका जा सकता।

मशहूर खलनायक और उनके संवाद

खलनायक अपने संवादों,अभिनय शैली,रंग रूप,कद काठी आदि से प्रभावी बंता है। कभी कभी खलनायक का एक संवाद टैगलाइन पूरी फिल्म में प्रभावी रहता है । मोगेम्बो खुश हुआ (अमरीश पुरी),मोना डार्लिंग (अजीत खान),प्रेम नाम है मेरा (प्रेम चोपड़ा), कितने आदमी थे(अमजद खान)बैड बॉय (गुलशन ग्रोवर), आऊ (शक्ति कपूर) जैसे लोकप्रिय संवादों ने इसे खलनायकों को अपनी पहचान दी है।

हिन्दी सिनेमा में खलनायकों की एक लंबी चौड़ी सूची बनाई जा सकती है । खुद खलनायकों की भूमिका निभा चुके प्रेम चोपड़ा कहते है की खलनायक हीरों से ज्यादा दिन तक चलता है । यह सही भी है । फिल्म शोले में दोन मशहूर अभिनेता और अभिनेत्री होने के बावजूद विलेन के किरदार में अमजद खान अपनी मजबूत उपष्ठीती बनाने में सफल हुए है । आज शोले का गब्बर अपने संवादों के लिए ही याद किया जाता है ।

शक्ति कपूर हिन्दी सिनेमा के रेपिस्ट बॉय कहे जाते है। इसके अलावा उन्होने कॉमेडी में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है । फिल्म कुर्बानी और रोकी में क्रमश; विक्रम सिंह और आरडी के किरदारों को काफी लोकप्रियता मिली थी । लगभग 30 सालों से लीड खलनायक के चरित्रों को निभाले वाले शक्ति कपूर ने 00 से अधिक फिल्मों में खलनायकी की है । फिल्म तोहफा 1984 में श्री देवी के पति कामेश की खलनायकी भूमिका तथा संवाद ओउ लोलिता,फिल्म चालबाज़ 1989 का चुलबुला बटुक नाथ लललन प्रसाद,फिल्म अंदाज अपना अपना 1994 का क्राइम मास्टर गोगो,फिल्म तकड़ीर्ववाला का छोटा रावण,फिल्म गुंडा के खलनायक चुटिया और उसके संवाद "मेरा नाम है चुटिया अच्छे अच्छों की खड़ी कर दूँ खटिया"फिल्म हँगामा का कचरा सेठ आदि इनके यादगार खलनायकी चरित्र और संवाद है।

400 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके गुलशल ग्रोवर खुद को खलनायकी रूप में स्थापित कर चुके है । उनका खलनायकीय रूप सिनेमाई पर्दे पर काफी डरावना दिखता है। उनके चेहरे की खतरनाक हंसी उन्हे डेंजर इलेन के रूप में पहचान्न देती है । "भाग कर कहाँ जाएगी,दरवाजा दोनों तरफ से बंद है" "हम सिर्फ खेलने के लिए नहीं जीतने के लिए आयें है" "दोबारा कोई छल करने की कोशिश की तो मैं नहीं मेरी एक के 47 बोलेगी" "अपने धंधे में हवस चलती है,इश्क नहीं चलता" "प्यार से गले लग जा रानी बना दूंगा,वरना पानी पानी कर दूंगा" "तवायफ और तितली में कोई फर्क नहीं होता,तितली भी एक फूल पर नहीं टिकती और तवायफ एक मर्द पर" "बैड मैन" "बाई गॉड दिल गार्डेन गार्डेन हो गया " जैसे संवाद गुलशन के खलनायीक चरित्र को और उभरते है उन्हे पहचान देते है । इन संवादों से उनके खलनायक चरित्र के खतरनाक रूप को समझा जा सकता है।

मै हूँ इस जिस्म के बाज़ार का महाराजा नाम है महारानी । फिल्म सड़क का यह संवाद अभिनेता सदाशिव आम्रपूरकर ने बोला है । फिल्म में वो एक हिजड़े के किरदार में है जो फिल्म का खतरनाक खलनायक है । फिल्म के प्रदर्शन के दिनों के बाद उनके निभाए इस चरित्र का प्रभाव इतना हो गया की लोग हिजड़ों से डरने लगे । उन्हे संदेह की नज़र से देखा जाने लगा । संवाद अदायगी के स्टार अभिनेता सदाशिव अपने संवाद नाग हूँ मैं... काला नाग (एलान-ए-जंग), अब हम उसके साथ खेल खेलेंगे ... हैवानियत का खेल (एलान-ए-जंग), ये साला भूलने की आदत मैं कब भूलूँगा(आँखें),ऐसी मौत मारूँगा की इश्क करने वालों की रूह काँप जाएगी (इश्क),तुम क्या समझती हो कृष्ण भगवान तुम्हें बचाने आएंगे... वो महाभारत में आए थे इस भारत में नहीं आएंगे (आखिरी रास्ता), नाम है मेरा हटेला हिटलर,मेरी मक्कारी के सामने हिटलर भी बन जाएँ बटलर (दो नंबरी), मैं एक बार कहता हूँ .... सौ बार समझा लेना (दो नंबरी) जैसे संवादों ने सदाशिव को जीवंत किया । उनके खलनायकीय चरित्रों को और उभारा । जिससे वो और भी खतरनाक रूप लें पाए ।

सारा शहर मुझे लायन के नाम से जानता है, फिल्म कालीचरन 1967 का यह संवाद अजित खान की जुबान से निकला है । उन्हे इस संवाद ने खलनायकों की दुनिया का लायन बना दिया । लिली डोंत बी सिली,मोना डार्लिंग जैसे संवादों को आज भी दर्शक श्रोता पाठक बिना कंठष्ट किए याद रखते है,यही संवाद अदायगी की मुख्य प्रतिभा होती है। खलनायक की प्रतिभा के निखार में नायक की प्रतिभा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसी कारण अभिनेता धर्मेन्द्र के साथ अजित के निभाए किरदार अधिक प्रभावी रहे। उन्होंने धमेन्द्र के साथ यादो की बारात, जुगनू, प्रतिज्ञा, चरस, आजाद, राम बलराम, रजिया सुल्तान और राज तिलक जैसी अनेक कामयाब फिल्मों में काम किया। यह बात जग जाहिर है की जहां फिल्मी पर्दे पर खलनायक बहुत क्रूर हुआ करते है वहीं वास्तविक जीवन में बहुत सज्जन होते हैं। निजी जीवन में अत्यंत कोमल हृदय अजित ने इस बीच हम किसी से कम नहीं (1977), कर्मयोगी, देस परदेस (1978), राम बलराम, चोरनी (1981), खुदा कसम (1981), मंगल पांडेय (1982), रजिया सुल्तान (1983) और राज तिलक (1984) जैसी कई सफल फिल्मों मे अपना एक अलग समां बांधे रखा।

सिक्किम से बॉलीवुड तक का सफर तय करने में डैनी डेञ्जोपा को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। सकारात्मक चरित्रों वाले किरदार निभाने के उन्हे असली पहचान सिनेमा के खलनायक के रूप में मिली । फिल्म घटक का कथ्य और क्रांतिवीर का चतुर सिंह की आवाज आज भी कानों पर सुनाई दे जाएँ तो डर की अनुभूति महसूस की जा सकती है । अग्नि पथ का काँचा चीना इतना लोकप्रिय रहा की इसे बाद की रेमेक बनी अग्निपथ में अभिनेता संजय दत्ता ने इस किरदार को निभाया । लेकिन इसके बावजूद मानकों पर खरे डैनी ही उतरे । फिल्म घटक का संवाद "इसकी मौत सोचनी पड़ेगी"फिल्म शेषनाग का संवाद "मौत और बदनसीबी दो ही ऐसी छीजे है जो बगैर ख़बर दिये आती है" सनम बेवफा का संवाद "एक पहाड़ का नाम है शेर खान।और पहाड़ न किसी के सामने चल कर जाता है न किसी के सामने झुकता है" फिल्म क्रांतिवीर का संवाद "हम तुम्हें ऐसे जलएंगे की तेरे चाहने वालों को गंगा में बहाने के लिए तेरी राख़ भी नसीब नहीं होगी" फिल्म युद्ध का संवाद "हम खतरों को पलटे नहीं खत्म कर देते है" और अग्नि पथ का संवाद "अपना उसूल कहता है की दायें हाथ से जुर्म कारों तो बाएँ हाथ को पता भी न चले" जैसे संवाद डैनी की पहचान है । उनके खलनायकीय जीवन को और समृद्ध करते है ।

फिल्म बॉबी के प्रेम चोपड़ा को राज कपूर ने सिर्फ इस लिए फिल्म में रखा था की लोग इसे देख कर खुद समझ जाएंगे की यह कुछ बदमाशीयां करेगा । इसी फिल्म का संवाद "प्रेम , प्रेम नाम है मेरा" चर्चित हुआ । 1964 में आई फिल्म वो कौन थी का खलनायक,उपकार में मनोज कुमार के भाई के किरदार (नकारात्मक) प्रेम चोपड़ा के पर्याय है । प्रेम चोपड़ा जब विलेन के रूप में छा गए तब राजेश खन्ना का हीरो के रूप में नाम दौड़ रहा था। दोनों को साथ लेकर बनाई गई फिल्में जब सफल होने लगी तो उन्हें 'लकी पेयर' माना जाने लगा।19 फिल्में दोनों ने साथ की जिसमें से 15 सुपरहिट रहीं। राजेश खन्ना जब कोई फिल्म साइन करते तो वितरक उनसे हीरोइन का नाम नहीं पूछते बल्कि यह पूछते की क्या प्रेम चोपड़ा इस फिल्म में है। राजेश खन्ना और उनके बीच गहरी दोस्ती थी और राजेश खन्ना की मृत्यु तक यह दोस्ती कायम रही।

मोगेम्बो खुश हुआ फिल्म मिस्टर इंडिया के प्रभावशाली संवादों में शुमार है । अमरीश पुरी ने इसमें खलनायक मोगेम्बो की भूमिका निभाई है । इसके अलावा खलनायकों के स्टार अमरीश पुरी की अन्य फिल्मों नगीना,शहँशाह,हीरों एतराज आदि में अपनी खलनायकी का लोहा मनवा चुके है । उनकी आवाज और रोबीले व्यक्तित्व के लिए उन्हे हिन्दी सिनेमा कभी भुला नहीं पाएगा । ये दौलत भी क्या चीज है जिसके पास जितनी रहती कम ही लगती है, मोगेम्बो खुश हुआ,जा सिमरन जा,जो

ज़िंदगी मुझसे टकराती है वो सिसक सिसक कर दम तोड़ देती है (घायल) आदमी के पास अगर दिमाग हो तो वह अपना दर्द भी बेच सकता है (एतराज) ऐसी मौत मरूँगा इस कमीने को की भगवान यह पुनार्जन्म वाला सिस्टम ही खत्म कर देगा (करण अर्जुन), तबादलों से इलाके बदलते है इरादे नहीं (गर्व) जैसे संवाद अमरीश पुरी की पहचान है।

शोले का गबबर सिंह (अमजद खान)अपने खलनायकीय चरितरा और आवाज का कायल पुरी दुनिया को बना चुका है। इसके अलावा उनके अन्य खल चरित्र फिल्म परवरिश,मुकद्दर का सिकंदर,लावारिस,हीरा लाल पन्ना लाल,सीटर पुर की गीता,हिम्मत वाला,जैसी 130 से अधिक फिल्मों में देखे जा सकते है।

शेर खान आज का काम कल पर नहीं छोडता,इस इलाके में नए आए हो बरखुद्दार-वरना शेर खान को कौन नहीं जानता,शेर खान ने शादी नहीं की तो क्या हुआ-बरतें बहुत देखी है,जैसे संवादों को गंधने वाले अभिनेता प्राण की खलनायकी को भुला पाना आसान नहीं है। उपकार का अपाहिज किरदार,जंजीर का अख्खड़ी पठान जैसी भूमिका सरहनीय है। दमदार संवाद अदायगी के पुरोधा ओमपुरी किसी तारीफ के मोहताज नहीं थे। नरसिम्हा का बाप जी इतना क्रूर और कष्ट देने वाला है की नायक सनी देओल स्वत; अपने नायकत्व में उभरते चले जाते है।

मौजूदा परिदृश्य में नज़र डालते हुए खलनायकी भूमिका पर बात करें तो आज के सिनेमा में स्थापित अभिनेताओं ने भी विलेन की भूमिकाओं वाली फिल्मों में काम किया है। कृष 3 और कंपनी जैसी फिल्मों में सुपर विलेन बनें विवेक ओबेरे,फिल्म खलनायक और अग्नि पथ में क्रमश;गैंगस्टर बल्लु और काँचा चीना,वांटेड के गनी भाई बनें प्रकाश राज,फिल्म डर के राहुल मेहरा बने शाहरुख,फिल्म धड़कन के देव बने सुनील शेट्टी,दबंग का छेड़ी सिंह बने सोनू सूद,सरफरोश फिल्म के किरदार गुलफाम हसन बने नसीरुद्दीन शाह,संघर्ष के लज्जा शंकर पांडे और फिल्म दुश्मन के गोकुल पंडित बने आशुतोष राणा,फिल्म शान के साकाल बने कुलभूषण खरबन्दा,गैंग ऑफ वासेपुर के रामधीर सिंह बने तिग्मांशु धूलिया,लंगड़ा त्यागी बने सैफ अली खान जैसे खलनायक खलनायकी के विस्तार और बदलते रूप के प्रमुख उदाहरणों में गिने जा सकते है। खलनायक के बदलते परिदृश्य तथा सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिवेश को भी इन फिल्मों के खलनायकों से जाना समझा जा सकता है।

फिल्म किस्मत का शेखर (अशोक कुमार) जिसे निर्देसहक ज्ञान मुखर्जी ने एंटी हीरों के रूप में पहली बार पर्दे पर उतारा,समाज की दयनीय स्थिति से इतर दिखने वाला साहूकार सुखी राम (कन्हैया लाल) जंजीर का तेजा (अजीत खान)जैसे किरदारों से शुरू हुआ यह सफर आज शाहरुख खान जैसे अन्य सुपर स्टार अभिनेताओं के द्वारा निभाए जा रहे नकारात्मक छवि वाले किरदारों तक पहुच गया है। एक समय था जब रोमांटिक हीरों राज बब्बर भी फिल्म इंडियन में विलेन के किरदार में देखे गए।

विलेन के सहयोगी (हेंचमैन)

खलनायक का साम्राज्य फिल्म में इतना बड़ा भी हो सकता है की उसके लिए काम करने वाले लोगों का आतंक ही दर्शकों हो क्रूर लगें। हिन्दी सिनेमा में ऐसे कई किरदार रचे गए जो बड़े खलनायकों के लिए काम करते थे। इनमें एम बी शेट्टी द्वारा निभाए गए फिल्म आज़ाद 1978 में अजीत के सहयोगी,फिल्म एक से बढ़कर एक 1976 जॉन का किरदार,प्राण जाएँ पर बचन न जाएँ *1974* में मंगल सिंह के सहयोगी के अलगा अनोकों फिल्मों में शेट्टी का किरदार इनके द्वारा निभाए गए। हिन्दी सिनेमा के स्टंट मैन एम बी शेट्टी का नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है।

भक्त ध्रुव और गोपाल कृष्ण फिल्म में जीवन द्वारा निभाएँ नारद के किरदार,खुदा गवाह में पाशा भाई का किरदार (किरण कुमार),इंडियन फिल्म में वाशिम खान बनें मुकेश ऋषि मोगेम्बो का दायाँ हाथ डागा और घाल के कैप्टन डेका बने शरत सक्सेना मिस्टर इंडिया के वालकोट बने बॉब क्रिस्टीनो ,फिल्म मर्द के हैरी बने साइमन,सीता और गीता के बैड मैन रंजीत के हेंच मैन रूपेश कुमार ने ग्रेट ग्लेम्बलर ,आदमी और इंसान,मन और ममता,जख्मी औरत,आदि फिल्मों में खलनायक के साहयोगी होने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

खलनायिकाएं

हिन्दी सिनेमा के खलनायकों की पहचान भलें ही उनके संवादों से हो जाती है लेकिन खलनायिकाओं की पहचान उनके किरदारों से ही होती है। रामायण के प्रमुख किरदार कैकेई की तरह हमें हिन्दी सिनेमा में भी कै कैकेई से प्रभावित किरदारों को देखा जा सकता है। ललिता पवार,अरुणा ईरानी,मनोरमा,नादिरा,शशिकला,आदि ने यादगार खलनायिकाओं की भूमिका निभाई है। एक एतिहासिक सर्वेक्षण में नज़र डालें तो पाएंगे की नकारात्मक छवियों को निभाने में अभिनेत्रियों ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिल्म गुप्त की काजोल(ईशा दीवान का किरदार),गोलियो की रास लीला में धनकोर बा सनेरा बनी सुप्रिया पाठक,एतराज की मिसेस सोनिया राय बनी प्रियंका चोपड़ा,प्यार तूने क्या किया की रिया बनी उर्मिला मातोंडकर,गुलाब गैंग की सुमित्रा देवी बनी जूही चावला ,भूल भुलैया की मंजूलिका बनी विद्या बालन,मकड़ी की मकड़ी बनी शबाना आज़मी,हिस्सा की नागिन बनी मल्लिका शेरावत,फिल्म दहेज की ललिता पवार (मिसेज बनवारी लाल के किरदार में)श्री 420 की गंगा माई,फिल्म बेटा की अरुणा ईरानी,फिल्म आन,वारिस,दिलं अपना प्रीत पराई की नादिरा आदि को हिन्दी सिनेमा की मशहूर खलनायिकायों के लिए याद किया जा सकता है। इनके प्रभाव किसी भी तरह खलनायकों से कमतर नहीं आँके जा सकते। सिर्फ एक खलनायिका ललिता पवार ही खलनायकों को टक्कर देती नज़र आती दिखती है। उद्दंत माँ के किरदार के लिए चर्चित ललिता पवार ने फिल्म दहेज और मिस्टर एंड मिसेज 1955 में सराहनीय भूमिका निभाई है। इसके अलावा फिल्म जंगली में डरावनी माँ तथा प्रोफेसर फिल्म 1962 में क्रेज़ी रोल ऑफ वुमें का किरदार निभा चुकी है। नए सिनेमा मे बिन्दु ने उनकी परंपरा को आगे बढ़ाया। हम आपके है कौन,इम्तिहान जैसी फिल्मों में खलनायिका निभा चुकी है। रेखा की फूल बने अंगारे,फूल और पत्थर की शशिकला की भूमिका सरहनीय है। बीच के कुछ वर्षों के खलनायिकाओं का चित्रण मात्र कैबरे डांस,आइटम नंबर आदि के आधार पर ही तय किया जाता था। लेकिन अब स्थिति फिर से ठीक हुई है। साहब बीबी और गैगस्टर के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त माही गिल का नकारात्मक चरित्र यादगार है। फिल्म एक थी दायाँ की कल्कि कोचीन का फिल्म के क्लाइमेक्स में चित्रण देखने पर एक अलग ही अनुभूति मिलती है। बदलाव की कहानी को पेश किया गया है। फिल्म कलियुग की अमृता सिंह का पॉर्न व्यापारी वाला किरदार उन्हे एक खतरनाक खलनायिका के रूप में चित्रित करता है। फिल्म अरमान की प्रीति जिंटा का सोनिया कपूर वाला किरदार आज भी हिन्दी सिनेमा की बैड गर्ल के नामों में शुमार है।

नादिरा द्वारा निभाए गए फिल्म आन,श्री 420,पाकीजा के किरदार हिन्दी सिनेमा की मशहूर खलनायिकाओं में शुमार किया जा सकता है। 70 से 80 के दशक में तेज तर्रार महिला और सास के किरदारों में बिन्दु जँचती है। तथा फिल्म के जरिये अपना डर फैलाती है। हम दिल दे चुके सनम में सलमान की माँ रोल निभाने वाली हेलेन को खलनायिका के किरदारों में देखना सुखद है। बने बनाए घर को तोड़ने फोड़ने वाली माँ,सास,बहु आदि पारिवारिक केंद्र से इतर अब की खलनायिकाएं नए नए चरित्रों में देखी जा रही है।

वो पुरुष साथी कलाकारों को कड़ी टक्कर देते हुए सिनेमाई पर्दे पर देखि जा रही है। और सराही भी जा रही है। भले ही उनकी भूमिका नकारात्मक क्यो न हो। खास बात तो यह भी है की पुरुष खलनायक भी तो यहीं काम करते है। उन्हे याद और सराहना उनके किए गए कुकृत्य,हिंसात्मक रवैये,ज्यादा से ज्यादा क्रूर और धारदार संवाद शैली ए लिए ही किया जाता रहा है। पचास साथ सत्तर के दशक में अपने नृत्य के जरिये डर पैदा करने वाली,माह मोहने वाले किरदारों के लिए उन्हे याद किया जा सकता है।

वो लम्हे,फैशन,कृष 3 जैसी फिल्मों में नकारात्मक छवि के लिए मशहूर अदाकारा कनगा रनौट इन फिल्मों में खलनायिका की भूमिका में थी। जिनहे दर्शकों ने खूब सराहा। फिल्म कर्ज की सिमी गेरेवाल का कामिनी का किरदार,राज 3 में सनाया शेखर (विपाशा वसु)का किरदार,इश्किया की कृष्ण वर्मा(विद्या बालन)के किरदारों में नए हिन्दी सिनेमा में महिला खलनायकों की बदलती स्थिति और विस्तार को देखा जा सकता है।

विश्व की खलनायिकाएं

खलनायकों के वैश्विक चिंतन मनन करते हुए हॉलीवुड को नजर अंदाज करना कहीं से भी सही नहीं है। एक अलग तरह का खलनायकीय चरित्र हमें वहाँ कि फिल्मों में देखने को मिलता है। ऐसा नहीं है भारतीय फिल्मों से उनकी समानता नहीं है लेकिन उनके और हमारे हलनायकों और खलनायिकायों द्वारा इस्तेमाल यंत्रों में भी उनकी प्रोद्योगिकी का बढ़ता रूप देखने को मिलता है। फिल्म जेनिफर्स बॉडी में मेगन फॉक्स की सेक्स डीलर कि भूमिका,फिल्म गोल्डेन आई में जेनिफर ओनटोप के किरदार में जमके जैनसन (मुख्य विलेन अलेस ट्रेवेलयन कि हेंच विमेन),अमेरिकन डार्क फैटेसी फिल्म मेल फ़ीसेंट में एंजेलिना जोली की एक अपराधी की भूमिका ,फिल्म कील बिल कि डाइरेल हाना का नकारात्मक रूप,फिल्म अंदर द स्किन की खलनायक स्कोरलेट जॉन्सन,हेले वेरी की नकारात्मक छवि वाली फिल्म कैट विमेन,फिल्म क्वीन ऑफ द डैमंद कि आलियाह ,फिल्म एक्स मैन की जेनुयारी जोन्स,फिल्म मिस्क्लिक्यू कि जेनिफर लॉरेंस तथा लिज हर्ले की फिल्म बेडजल्ड में नकारात्मक भूमिका वैश्विक परिदृश्य में खलनायिकाओं को उभारती है। हालांकि इन सभी फिल्मों में निभाएँ गए चरित्र भारत की फिल्मों में निभाएँ गए खल चरित्रों से कहीं ज्यादा प्रभावशाली है।

उपसंहार

बुराई पर अच्छाई की जीत का मुहावरा सही अर्थों में परिपूर्ण करता हिन्दी सिनेमा अपने उदय काल से ही अभिनेता और विलेन की मार कराता आया है। महाभारत में पांडवों ने कौरवों को हराया रामायण में राम ने रावण को। विलेन/खलनायक वहीं क्रूर हो,निर्दयी हो,दुष्ट हो,अमानवीय हो,बेशर्म हो,असामाजिक हो। आज़ादी के पहले की फिल्मों में साहूकारों का विलेन होना हमारे समाज कि वास्तविक सच्चाई से रूबरू करता है। वहीं आज के भारत में भी इसके बदलते रूप को देखा पाया जा सकता है। आज़ादी के बाद का सिनेमा जहां नयी सरकारों के आने से,नए कानून बनने से नयी नयी समस्याओं से सामना आम जन मानस को करना पड़ा। मदर इंडिया जैसी फिल्मों में खलनायक कौन और कितने है यह सोचनीय और शोध का प्रश्न है।

सत्तर का दशक सिस्टम से सताये जाने के विरोध में खड़ा हुआ एंग्री यंग मैन का युग है। वह सिस्टम द्वारा भाड़े पर लिए गए खलनायकों से लड़ता है। आम जनमानस का हीरो बंता है। लेकिन मेरे मन में एक प्रश्न फिर भी उठ रहा है कि हीरों जिस समाज की बात कर होता है जिसके लिए वह लड़ रहा होता है उसी समाज से वह निकले हुए खलनायकों के सहयोगी (हेंच मैन) को मारता है।

महिला विलेन का इतिहास एक अलग दृष्टिकोण पीएसएच करता है। रामायण के पात्र कैकेई पर आधारित हिन्दी सिनेमा में ढेरों फिल्में बनी है। जिनमें पात्रों को कै केई की तरह विलेन बना कर पेश किया गया है। ललिता पवार,शशिकला,नादिरा,आदि का काम फिल्मों में कैकेई की तर्ज आर ही हमें दिखता है। मौजूदा परिदृश्य बदला है तो एतराज,राज 3 हिस्सा आदि फिल्मों के विलेन भी बदले है। सीधे अर्थों में देखा जाएँ तो किसी फिल्म का अभिनेता सार्थक तभी हो सकता है जब उस फिल्म का खलनायक प्रभावी हो। यहीं भारतीय फिल्मों का सिद्धान्त बन चुका है। हलनायक व्यक्ति,मुद्दा,शहर आदि कुछ भी हो सकता है लेकिन यह पत्र व्यक्ति पर ही केन्द्रित रखा गया है। अभिनेता को उभारने में खलनायक की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। खलनायक चरित्रों को कमतर आंकना सही नहीं है। खलनायकों का दर्शकों पर इतना असर है कि चॉकलेटी हीरों रहे शाहरुक राज बब्बर,सुनील शेट्टी,अखय कुमार,आदि अभिनेताओं को नकारात्मक छवियों वाली फिल्में करनी पड़ी है।

संदर्भ सूची

1. https://www.pastemagazine.com/blogs/lists/2012/07/the-25-best-villains-in-film.html august 15 2017,09;15 pm
2. https://www.timeout.com/newyork/film/the-50-best-movie-villains-of-all-time august 17 2017,09;25 am
3. http://www.complex.com/pop-culture/2013/02/best-villains-movie-history/ august 15 2017,09;15 pm
4. http://www.indiatimes.com/entertainment/bollywood/16-badass-villains-from-bollywood-who-still-give-us-the-creeps-232642.html sept 15 2017,09;15 pm
5. https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_Bollywood_villain_actors sept 15 2017,07;15 pm
6. https://www.filmykeeday.com/best-villains-of-bollywood/ sept 16 2017,10;15 pm
7. https://www.scoopwhoop.com/entertainment/bollywood-villains/ august 15 2017,09;15 pm
8. http://www.oneknightstands.net/top-20-villains-of-bollywood/ august 15 2017,07;15 am
9. Indian express 2009.'hritik or abhishek for agneepath remake,'indian express,Mumbai august 24
10. Bipin Chandra,the rise and grouth of economyc nationalism in india (nea delhi; peoples publisher house,1969),pg 469
11. Deepa gahlot,'villains and vamps,' in bollywood popular Indian cinema,l.m. joshi .piccadili,London;dakini books ltd,2001
12. tapan k ghosh, bollywood baddies,villains,vamps,and henchman in hindi cinema , sage publicationne delhi .